

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 4889
01 अप्रैल, 2025 को उत्तरार्थ

विषय : केरल में काली मिर्च की खेती में गिरावट

4889. डॉ. एम. पी. अब्दुस्समद समदानी:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार को केरल में काली मिर्च की खेती में गिरावट के बारे में जानकारी है;
- (ख) इस गिरावट के मुख्य कारणों का ब्यौरा क्या है तथा जलवायु परिवर्तन, कीट और कम कीमतों का ब्यौरा क्या है;
- (ग) काली मिर्च के उत्पादन में कमी से किसानों की आय और निर्यात पर पड़ने वाले प्रभाव का ब्यौरा क्या है; और
- (घ) सरकार ने काली मिर्च के किसानों को सहायता देने के लिए क्या कदम उठाए हैं और मूल्य स्थिरीकरण, अनुसंधान और उच्च उपज वाली किस्मों को बढ़ावा देने संबंधी कार्यों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क): केरल में काली मिर्च की खेती का क्षेत्रफल वर्ष 2014-15 में 85,431 हेक्टेयर से घटकर वर्ष 2023-24 में 72,669 हेक्टेयर रह गया है। इसी अवधि के दौरान काली मिर्च का उत्पादन भी 40,690 टन से घटकर 30,798 टन रह गया है।

(ख): केरल में काली मिर्च उत्पादन में गिरावट के प्रमुख कारणों के रूप में पहचाने गए कारक निम्नानुसार हैं:

- कीटों का प्रकोप, पोलु तथा फुट रॉट तथा धीमी गिरावट जैसी बीमारियां काली मिर्च की खेती में महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश करती हैं। केरल में, इन कारकों के कारण अनुमानित उपज में 8% से 10% के बीच कमी है।
- वर्ष 2018 और 2019 के दौरान राज्य में आई अभूतपूर्व बाढ़ की स्थिति ने काली मिर्च सहित कई फसलों को प्रभावित किया। बाढ़ के समय इस काली मिर्च की कीमत कम थी। इसके कारण किसानों की फसल में रुचि कम हो गई, जिसके परिणामस्वरूप खराब प्रबंधन और कम पैदावार हुई। बाद के वर्षों में वर्ष 2021-22 तक कम कीमतें रहीं, जिसके दौरान काली मिर्च के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में और गिरावट आई।
- पर्याप्त मृदा एवं नमी संरक्षण उपायों के अभाव के परिणामस्वरूप मृदा पोषण एवं नमी में गिरावट आ रही है।
- काली मिर्च की कीमतों में उतार-चढ़ाव और बेहतर कीमत वाली अन्य लाभदायक फसलों का आक्रमण।

(ग): केरल में, काली मिर्च की खेती के लिए मुख्य रूप से प्रचलित प्रणाली एक "व्यापक घरेलू खेती" है, जहाँ काली मिर्च की खेती कई अन्य फसलों के साथ की जाती है। इसे, कॉफी के बागानों में छायादार पेड़ों पर

मिश्रित फसल के रूप में भी उगाया जाता है। मिश्रित फसल प्रणाली में, किसान को अन्य फसलों से होने वाली आय से सहायता मिलती है। इसके अलावा, अतीत में काली मिर्च की कीमत का रुझान एक चक्रीय पैटर्न दिखाता है। काली मिर्च की बहुत लंबी शेल्फ-लाइफ़ किसानों को संकट में बिक्री के बिना, लाभकारी कीमतों में बिक्री करने का लाभ प्रदान करती है।

काली मिर्च के निर्यात में उतार-चढ़ाव का रुझान देखने को मिला है, जो मुख्य रूप से अन्य उत्पादक देशों में काली मिर्च की उपलब्धता और भारतीय काली मिर्च की कीमत से प्रभावित है। सामान्यतः भारतीय काली मिर्च की कीमत अन्य उत्पादक देशों की तुलना में अधिक होती है। अतः इन बाजारों में इसकी गुणवत्ता के कारण भारतीय काली मिर्च को अन्य देशों की उपज की तुलना में प्राथमिकता दी जाती है।

(घ): भारत सरकार, एमआईडीएच के तहत, केरल राज्य बागवानी मिशन के माध्यम से मिर्च सहित बागवानी फसलों के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कार्यक्रम कार्यान्वित करती है। इनमें गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का वितरण, क्षेत्र विस्तार/नए बागानों की स्थापना, जीर्ण बागों का पुनरुद्धार और पुनर्वास, आईपीएम/आईएनएम को बढ़ावा देना, फसलोपरांत प्रबंधन, बाजार यार्डों का विकास, मानव संसाधन विकास आदि प्रमुख घटक हैं।

सुपारी और मसाला विकास निदेशालय (डीएसडी), कोझीकोड, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग भी राज्य में केरल कृषि विश्वविद्यालय और आईसीएआर-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर), कोझीकोड के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को सीधे कार्यान्वित करता है।

काली मिर्च के लिए डीएसडी द्वारा शुरू किए गए प्रमुख कार्यक्रम हैं:

- गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री का उत्पादन एवं वितरण।
- काली मिर्च सहित मसालों की उच्च गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उच्च तकनीक नर्सरियों की स्थापना।
- सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में काली मिर्च नर्सरियों का प्रमाणन,
- काली मिर्च बागानों के लिए पुनर्वास कार्यक्रम ।
- काली मिर्च की किस्मों के प्रमाणीकरण हेतु वैज्ञानिक तकनीक विकसित करने के लिए आईसीएआर-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान को सहायता प्रदान करना।

आईसीएआर-आईआईएसआर, आईसीएआर-अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी) और केरल कृषि विश्वविद्यालय (केएयू) ने 21 उच्च उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी काली मिर्च की किस्मों को सफलतापूर्वक विकसित किया है। वर्तमान में भारत में इन किस्मों ने लगभग 70% काली मिर्च उत्पादन क्षेत्र को कवर किया हुआ है, जिससे उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

आईसीएआर-आईआईएसआर, कोझीकोड ने केरल कृषि विश्वविद्यालय (केएयू) के सहयोग से प्रसार तकनीकों, मृदा, पोषक तत्व और जल प्रबंधन, रोग और कीट प्रबंधन तथा जैविक और सतत कृषि पद्धतियों के संबंध में लक्षित अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास के माध्यम से काली मिर्च की खेती में महत्वपूर्ण प्रगति की है।